आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026
Received: 19/03/2026; Published: 28/03/2026

कहानी

कर्जा गुलाम

- डॉ. विजय कुमार
सहायक प्राध्यापक (अनुबंध)
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची।
मो.नं.-8051153860, 9113438390
E-Mail ID: vijaybro1320@gmail.com

डॉ. विजय कुमार , कर्जा गुलाम , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026,** (152-157)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शाम ढलने को थी। हल्की-हल्की रोशनी में रूपा तेज कदमों से चली जा रही थी। आज ज्यादा देर हो गया, कुत्ता बबलु जबरदस्ती मेरा रास्ता रोके हुए था.... रूपा कहती है।

रूपा एक साधारण गरीब महिला थी, जो रेजा मजदूरी का काम करने गांव से दूर जाती थी। उसका पति भकुवा भी कुली का काम करता था। दोनों की दो बेटियाँ थी – रूप और रोली।

घर पहुँचते ही.... हरामजादी, इतना लेट से घर आ रही है, इतना देर कहाँ मर गयी थी - दारू के नशे में भकुवा ने कहा।

ज्यादा मत बोलो...... खुद दारू पी के अपना होश नहीं रहता, कहाँ गिरे, कहाँ मरे...... हमको सिखा रहा है...... - रूपा ने कहा।

दोनों की शादी हुए साढ़े चार साल ही हुए हैं और इतने साल में दो बच्चा हो गया। भकुवा दुबी गाँव का रहने वाला है, सब जमीन कर्जा लेकर खत्म कर दिया, बची-खुची बस थोड़ी सी जमीन में अपनी रोजी-रोटी चला रहा था। पत्नी रूपा को अपने फटेहाल स्थिति को देखते हुए रेजा का काम करना मजबूरी था। जैसे-तैसे जीवन कट रहा है, पर भकुवा गांव के मुखिया, साहूकार से बेटी की बीमारी का बहाना बनाकर पैसा उधार मांग लेता और दारू पी जाता।

रूपा कहती है...... ये करज खउवा...... सही से जीने भी नहीं देता। रोज एक लेनदार घर आ जाता है...... और पैसा मांगता......। पैसा मांगना तो बहाना था...... वे रूपा की जवानी ताड़ते और गाहे-बगाहे रूपा के नजदीक जाकर छेड़ते।

अपना और दो छोटे-छोटे बच्चों का पेट भरना पहाड़ सा लग रहा था, ऊपर से इसका बाप न काम करता, केवल दारू-दारू की खाक छानता।
अबे साली, कुतिया पैसा दे...... साला काम के बहाने बबलू के साथ नैन-मटका करने जाती है। भकुवा कहता है।

रूपा कहती है...... तुमसे शादी करके जीवन नरक हो गया......। साला हरामी हमको गरियाता है। दोनों का झिक-झिक रोज का दिनचर्या बन गया है। इतने में गांव का मुखिया विरेन्द्र आ जाता है......।

विरेन्द्र ने कहा - तुमदोनों का यह नाटक नहीं चलेगा...... मेरा पैसा वापस करो। तुम्हारा लड़ाई-झगड़ा से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। चुपचाप से पैसा दो, नहीं तो......

नहीं तो...... क्या नहीं तो...... क्या करना चाहते हैं? रूपा ने कहा। जान से मारवा देंगे...... हमको नहीं चिन्हा है? मुखिया ने कहा।

यह सुनकर दोनों डर गये...... सहम कर रूपा कहती है...... मालिक थोड़ा वक्त दे दीजिए। चाहे जैसे भी हो कर्जा-गुलाम करके पैसा लौटा देंगे।

मुखिया के चमचा...... भानु ने कहा, अबे साला भकुवा...... जल्दी पैसा लौटा दो, नहीं तो उठा लेंगे...... और भानु, सुरज, राकू, जीतु हंसने लगे।

दोनों की दशा ऐसी थी जैसे काटो तो खून नहीं।

रूपा रोते हुए कहती है...... सब तुम्हारा करनी का सजा है, जो हमको उतारना पड़ेगा।

मिट्टी की दीवार से बना खपड़ा का घर...... अन्दर से उदासी से भरी धीमी-धीमी रोशनी और अंधकार का द्वंद्व भरा था। कम वोल्टेज की वजह से मटमैला बल्ब बुझा-बुझा लग रहा था। पर वहाँ ढिबरी थोड़ी बुझते दीया का काम कर रही थी। एक डेकची, एक कढ़ाई और दो-चार बर्तन के अलावा खाट पर गंदा लेदरा बिछा हुआ था। मिट्टी के चुल्हे में जलती लकड़ी का धुआं घर में पसरा हुआ था। घर के कोने में चूहों ने अपना बिल बना रखा था, जो आये दिन रूप और रोली चुहों को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ती। चुहों का गंध घर को और नरक बना रहा था।

रूप और रोली के उम्र में ज्यादा फर्क नहीं था। यही नौ-दस महिना का।

ऐ रूपा...... ऐ रूपा...... कहाँ है रे...... - सुमन ने कहा।

कौन?...... सुमन दीदी...... रूपा ने कहा।

सुमन कहती है - अरे दीदी...... नहीं सुमन कहो, हम दोनों बराबर ही है। नहीं दीदी, आप हमारे आंगनबाड़ी की सहिया है। आप ने ही तो थोड़ा भकुवा को समझाया है नहीं तो हमको जिंदा नहीं बचने देता - रूपा ने कहा।

पियंकड़ हमरा भतार...... रोज दारू पी के मेरे में टूट पड़ता, इतनी जल्दी दो बच्चा पैदा कर दिया - रूपा कहती है। डाक्टर ने कह दिया है अबकी बार बच्चा हुआ तो हमरा जान चला जाएगा।

दीदी हमरा पति को डांटो और समझाओ न...... रूपा कहती है।

रूपा...... हम तो समझा सकते हैं। बाकी तुमको रोकना होगा, दारू पीकर आये तो सटने मत देना...... हंसते हुए सुमन कहती है।

रूपा कहती है...... दीदी वो हरामी साला...... पीने के बाद कुछ सुनता है...... जबरदस्ती करता है और नहीं सुनो तो...... मारने लगता है। बोलते-बोलते गला भर जाता है और रोने लगती है। हमरा जिंदगी बर्बाद हो गया...... दीदी...... दहाड़ मार-मार कर रोने लगती है। सिसक-सिसक कर कहती है...... मेरे बच्चों का क्या होगा......? दीदी...... हू...... हू......।

सुमन रूपा को गले लगाकर कहती है...... चुप...... रूपा चुप्प....। सब ठीक हो जाएगा। भकुवा से शादी करके हम बर्बाद हो गए......। कमीना कामचोर...... न काम-धाम करता है और न बच्चों को देखता है...... घर देखो, बच्चों को संभालो...... फिर मजदूरी करने जाओ...... बेसरम कमर तोड़ दिया है...... दीदी। रूपा रो-रोकर कहती है। ऊपर से मुखिया बाबु से तो साहूकार अर्जुन से पैसा लेकर बैठा है...... जीना हराम कर दिया है...... रूपा मायुसी से कहती है।

मैं समझाने की कोशिश करूंगी....... सुमन कहती है।

रूपा कहती है.... हाँ..... दीदी, बहुत बदमाश है...... कुछ समझाइए। दारू पीने का इतना फितूर है.... लगता है हमको बच्चा लोग को भी बेच देगा.... कमीना।

हिम्मत मत हार रूपा...... धीरे-धीरे सुधर जाएगा। जब बेटी बड़ी होगी तब...... सुमन कहती है।

जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है..... वैसे-वैसे भकुवा और अधिक पीने लगता है। इधर रूपा मजदूरी भी करती और रूप और रोली को भी देखती। काम में रूपा को आये दिन बबलू ठेकेदार तंग करता, कभी हाथ पकड़ता, तो कभी कमर में चींटी काटता। इससे रूपा परेशान थी। पर कुछ नहीं कर सकती थी, क्योंकि कर्जा और भकुवा दोनों भारी पड़ रहे थे। रूपा की साथी मुनिया भी रेजा का काम करने जाती है। उसकी एकमात्र सहेली है। क्यों रे रूपा.....? तेरा मरद इतना पीता है.... तुझे मारता-पीटता है, उससे तंग नहीं लगता, छोड़ दे उसे। मुनिया ने कहा।

हू..... छोड़ दे और मेरी दो बेटी कहाँ जाएगी...... बोल मुनिया - रूपा कहती है।

मुनिया ने कहा - हम सब देख रहे हैं...... भकुवा से अच्छा ई ठेकेदार बबलु है, तुझे पसंद करता है..... भाग जा इसके साथ। रोज-रोज मरने से अच्छा उसे लात मार दे।

मेरा मरद इतना कर्जा-गुलाम कर दिया है कि मर भी नहीं सकते और तू..... छोड़ने बोलती है - रूपा कहती है।

तु ही बोल मुनिया....... छोड़कर जाना ठीक है....? दो बेटियों का बोझ कौन उठाएगा......? - रूपा कहती है।

तुम्हारा मती मारी गयी है क्या.....? वो कमीना मेरा साथ निबाह करेगा...... उसकी नियत नहीं जानती? आज मेरे तरफ तो कल दूसरी औरत पर। अब नहीं मुनिया..... एक से ही तर गये, अब कोई मरद नहीं चाहिए - रूपा कहती है। बस...... अच्छे से बच्चा लोग को पालना-पोसना है...... बाकी अपना करम।

एक शाम काम करके घर लौटती है रूपा। रूपा देखती है..... रोली, रोयी जा रही है..... बेटा.... मेरी बाबू.... क्या हुआ? क्यों रो रही है? - रूपा कहती है।

इधर-उधर नजर दौड़ाती है तो रूप कहीं नहीं दिखती। और इनकी बापू भी कहीं नहीं था। बेचैनी और धड़कन दोनों बढ़ जाती है...... चिल्लाती है....... कहाँ मर गया है.....? रूप और इनका बाप कहीं नहीं था। तुरन्त बाहर निकलकर जोर-जोर से आवाज लगाती है.....। रूप...... मेरी बेटी..... ओ बेटा..... कहाँ है....? ओ रूप के बापू किधर हो.... कहाँ...... चल गये।

इतने में घर के आसपास रहने वाले लोग आ जाते हैं.... काका..... हरिया..... ऐ बिन्दिया.... तुम सबने मेरी बेटी को देखा है.....? रूपा कहती है।

नहीं....... हम तो कभी काम, खेत से लौटे हैं....। हमने तो नहीं देखा। हरिया कहता है...... तु कहाँ थी.....? अरे अभी थोड़ी देर पहले काम से आये हैं और देखते है....... बापू और रूप बिटिया कहीं नहीं है। तब मैं चिल्लाने लगी...... रूपा कहती है।

चलो..... तुरन्त चलो खोजने..... काका कहता है। अंधेरा हो चुका था। चारों ओर सन्नाटा पसरा था। लालटेन लेकर सब खोजने गांव के आसपास निकल जाते हैं.... काली रात अपने चरम सीमा में थी। काफी देर हो चुकी थी, ढूंढ़-ढूंढकर पर कहीं नहीं मिले। पसीना से तर-बतर...... रूपा की धड़कने तेज हो गयी थी। आँखें चील की तरह रूप को खोज हो रही थी।

भगवान...... हे भगवान क्या हो गया......? हमरी बेटी कहाँ चली गई....? रूपा कहती है।

गांव में सोने का समय सब जाग रहा था...... और यह खबर आग की तरह फैल रहा था। ज्यादा रात हो जाने से डर लग रहा था, जंगल से कोई जानवर न निकल जाये, इसलिए लोग गांव में ही रहते हैं। कहते हैं सुबह खोजेंगे।

काफी देर बाद दूर से आते हुए रूप के पिता भकुवा को देखती है। रो-रोकर बुरा हाल में रूपा का पैरों तले की जमीन खिसक गयी, जब भकुवा को अकेला देखा।

कहाँ है.....? हमरी बेटी कहाँ है.....? बता...... नहीं तो तुमको जीने नहीं देंगे, उसे मारने-नोचने लगती है। हाथ झटकते हुए भकुवा कहता है..... हम नहीं जानते.....? तेरा बेटी कहाँ है..... साली। पैसा नहीं देती...... न देखभाल करती है.... और हमसे पूछती है...... बेटी कहाँ गयी........? हम का जाने.... कहाँ गयी......? साली...... हरामजादी...... हमसे पूछती है हूँ.....।

भकुवा दारू से तर इधर-उधर गिर रहा था। गंदे कपड़े, मांस खाया है, इसलिए कमीज में मसाला का दाग लगा हुआ है। रूपा सब देख रही थी.... नशे में धूत भकुवा धड़ाम से जमीन में गिरता है और इतने में जेब से एक नोट की गड्डी गिरती है.....।

****